मैथिलीशरण गुप्त और भारत–भारती

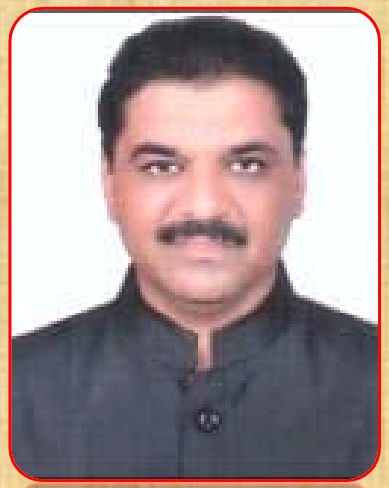

प्रो0 पवन अग्रवाल

हिन्दी तथा आधुनिक भारतीय भाषा विभाग

लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

2020

प्रस्तावना

- मैथिलीशरण गुप्त को राष्ट्रकवि की उपाधि दिलाने वाली प्रमुख रचना 'भारत–भारती' है।
- इस ग्रंथ की रचना सन 1912 ई0 में हुई।
- इसी वर्ष हिन्दी की प्रतिनिधि पत्रिका सरस्वती में इसका एक अंश 'अतीत भारत की सभ्यता' शीर्षक से छपा।

❖ 'भारत–भारती' का परिचय देते हुए 'सरस्वती' पत्रिका के सम्पादक महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने लिखा–

''सरस्वती के सिद्ध कवि बाबू मैथिलीशरण गुप्त ने एक नवीन काव्य रचना की है। उसे समाप्ति को पहुँचे अभी कुछ ही दिन हुए हैं। उसका नाम है 'भारत–भारती'। अपूर्व काव्य है हाली साहब के 'मुसद्दस के ढंग का है। उसमें भारत के उत्थान–पतन आदि का वर्णन है। शीघ्र ही छपकर प्रकाशित होगा। तब तक उसके विशेष–विशेष स्थल 'सरस्वती की हर संख्या में निकलेंगे।'

❖ 'सरस्वती' ने जितना महत्त्व 'भारत–भारती' को दिया संभवतः अन्य किसी कृति को नहीं।

- ‘भारत–भारती’ राष्ट्रीय भावना से अभिप्रेरित ‘जागरण काव्य’ है।
- ऊँघते–अलसाए देश का उद्‌बोधन काव्य है।
- समस्त देश वासियों में सात्त्विक ऊर्जा का संचार कर राष्ट्रीयता की निर्मल धारा प्रवाहित करने वाला उत्प्रेरक काव्य है।
- ‘भारत–भारती’ के अतीत, वर्तमान और भविष्यत् खण्डों में वर्णित भारत की प्राचीन गौरवगाथा, तत्कालीन दयनीय अवस्था और सुनहरे भविष्य के सपनों का साकार बिंब उपस्थित होता है।
- निःसन्देह इसे ‘आधुनिक गीता’ के नाम से अभिहित किया जा सकता है।

प्रो0 पूरनचंद टंडन

- ‘भारत–भारती’ हिन्दी क्षेत्र के नवजागरण का महत्वपूर्ण दस्तावेज है।
- ‘भारत–भारती’ जन–जन के गले का कंठहार बनी।
- देश को आजादी का नया जोश दिया।
- प्रभात फेरियों में इसके पद गाए–गुनगुनाए जाते थे।
- प्रकाशन के दो माह के भीतर ही इसकी बारह सौ प्रतियां बिक गयो थीं।
- खड़ी बोली हिन्दी को जन–जन तक पहुँचाने में इसका सबसे बड़ा योगदान था।
- पराधीन भारत में नवीन ऊर्जा का संचार इतनी तन्मयता, सादगी और सबलता से करने वाली यह एकमात्र कृति है।
- ‘भारत–भारती’ धर्म, जातीयता और सांप्रदायिकता से परे रचना है।
- कम समय में संपूर्ण भारत को एक सूत्र में पिरोकर सौहार्द, प्रेम और भाईचारा प्रदान करने वाली कृति है।

'भारत–भारती' का मुख्य ध्येय

- आदर्शों और जीवन–मूल्यों की रक्षा
- समस्त संकीर्णताओं की समाप्ति
- नैतिकता की प्रतिष्ठा
- हिन्दू पुनरूतीान

हम कौन थे, क्या हो गय, और क्या होंगे अभी।

आओ विचारें आज मिलकर,यह समस्याएँ सभी।।

'भारत–भारती' लेखन के प्रेरणास्रोत

- तत्कालीन परतंत्रता
- 1907 ई0 में सूरत अधिवेशन में कांग्रेस की दरार
- तिलक को छः वर्ष की जेल
- राष्ट्रीय चेतना का उभार एक वर्ग तक सीमित
- स्वतंत्रता हेतु आलस्य त्याग, वर्तमान परिस्थितियों से परिचित हो, कर्तव्य पथ की ओर उन्मुखता का संदेश।
- पं0 महावीर प्रसाद द्विवेदी और कुर्री सुदौली के नरेश राजा रामपाल सिंह का आग्रह और दबाव।
- फारसी कवि हाली द्वारा इस्लाम के उत्थान–पतन की गाथा के रूप में लिखा गया 'मुसद्दस' काव्य।

'मुसद्दस' और 'भारत–भारती'

- 'मुसद्दस' फारसी कवि हाली की कृति है जबकि 'भारत–भारती' खड़ी बोली के उन्नायक मैथिलीशरण गुप्त की कृति है।

- हाली ने 'मुसद्दस' के रूप में इस्लाम के उत्थान–पतन की गाथा लिखी है तो मैथिलीशरण गुप्त ने हिंदुओं की।

- मुसद्दस का 'हम' मुसलमान है, लेकिन वह 'हिन्दुस्तान नहीं है', जबकि 'भारत–भारती' का 'हम' हिंदू है और भारत है।

'भारत–भारती' का वस्तुपक्ष

1. भारत की श्रेष्ठता का प्रतिपादन

हां, वृद्ध भारत वर्ष ही संसार का सिरमौर है,
एसा पुरातन देश कोई विश्व में क्या और है?
भगवान की भवभूतियों का प्रथम यह भंडार है,
विधि ने किया नर–सृष्टि का पहले यहीं विस्तार है।

× × × × × ×

फैला यहीं से ज्ञान का आलोक सब संसार में,
जागी यहीं थी जग रही जो ज्योति अब संसार में।
'ईजिल' और 'कुरान' आदिक थे न जब संसार मे,
हमको मिला था दिव्य बौद्धिक बोध जब संसार में।।

2. अतीत के प्रति गौरव गान

शैशव दशा में देश प्रायः जिस समय सब व्याप्त थे,
निःशेष विषयों में तभी हम प्रौढ़ता को प्राप्त थे।
संसार को पहले हमीं ने ज्ञान–शिक्षा–दान की,
आकार की, व्यापार की, व्यवहार की, विज्ञान की,

× × × × × ×

कविवत्य शेक्सपियर तथा होमर सदा सम्मान्य है,
विख्यात फिरदौसी–सदृश कवि और भी अन्यान्य है।
पर कौन उनमें मनुज–मन को मुग्ध इतना कर सके?
वाल्मीकि, वेदव्यास, कालिदास जितना कर सके।

3. वर्तमान के प्रति क्षोभ

जिसकी आलौकिक कीर्ति से उज्ज्वल हुई सारी मही,
था जो जगत का मुकुट, है क्या हाय! भारत वही?
हा दैव! अब वे दिन कहां और वे रातें कहां?
क्या थे, अब हम क्या हुए, जानता बस काल है?

(क). कृषकों की दुर्दशा का वर्णन

पनी बनाकर रक्त का कृषि कृषक करते हैं यहाँ।

फिर भी अभागे भूंख से, दिन–रात मरते हैं यहाँ।।

(ख). अशिक्षा के व्यवसायीकरण का संकट

अधपेट रहकर काटते हैं मास के दिन तीस वे।

पावें कहां से पुस्तकें, लावें कहां से फीस वे।।

(ग). नारियों पर अत्याचार की ओर ध्यानाकर्षण

एसी उपेक्षा नारियों की जब स्वयं हम कर रहे,

अपना किया अपराध उनके शीश पर हैं धर रहे।

भागें न क्यों हमसे भला फिर दूर सारी सिद्धियाँ,

पाती स्त्रियाँ आदर जहां रहती वहीं सब ऋद्धियाँ।

(घ). धनी युवा वर्ग के पथभ्रष्ट होने की चिंता

रहती उन्हीं की ठाठ की है धूम मेलों में सदा,
आगे मिलेगें वे थियटर और खेलों में सदा।
वे नाच–मुजरे और जलसे हैं, उन्हीं से लग रहे,
हैं चार लोगों के उन्हीं से भाग्य जग में जग रहे।
बेड़ा इन्हीं से पार होगा क्या स्वेदश समाज का।।

(ड.). परिवारों में ईर्ष्या–द्वेष से विघटन

उद्दंड उग्र अनैक्य ने क्षय कर दिया है क्षेम का,
विद्वष ने पद हर लिया है आज पावन प्रेम का।
ईर्ष्या हमारे चित्त से क्षणमात्र भी हटती नहीं,
दो भाईयों में परस्पर अब यहा पटती नहीं।

(च). विदेशी प्रभाव से उत्पन्न भ्रष्टाचार, बेरोजगारी एवं गरीबी की चिंता

आती विदेशों से यहा सब वस्तुएँ व्यवहार की,

धन–धान्य जाता है यहा से, यह दशा व्यापार की।

कैसे न फैले दीनता, कैसे न हम भूखों मरें,

एसी दशा में देश की, भगवान ही रक्षा करें।

(छ.). अभिमान का दुष्प्रभाव

पैदा हुआ अभिमान पहले चित्त से निज शक्ति का,
जिससे रूका वह स्त्रोत सत्वर शील, श्रद्धा, भक्ति का।
अविनिताता बढ़ने लगी, अनुदारता आने लगी,
पर बुद्धि जागी, प्रीति भागी, कुमति बल पाने लगी।

(ज). कलाओं की विलुप्तता

अब लुप्त सी जो हो गई रक्षित न रहने से यहाँ।

सोचो तनिक कौशल्य की इतनी कलाएँ थी कहाँ।।

4. आलस्य को त्याग करने का उद्‌बोधन

हे भाइयों! सोए बहुत, अब तो उठो जागो अहो।

देखों जरा अपनी दशा, आलस्य को त्यागो अहो।।

5. संघर्ष एवं कर्म की प्रेरणा

बैठे हुए क्यों व्यर्थ हो आगे बढ़ो ऊँचे चढ़ो,
है भाग्य की क्या भावना अब पाठ पौरूष का पढ़ो।
है सामने का ग्रास भी मुख में स्वयं जाता नहीं,
हा ध्यान उद्यम का तुम्हें तो भी कभी आता नहीं।।

× × × × × ×

पुरूषत्त्व दिखलाओ पुरूष हो, बुद्धिबल से काम लो।
तब तक न थककर तुम कभी अवकाश पा विश्राम लो।।
नरजन्म पाकर लोक में कुछ काम करना चाहिए।
अपना नहीं तो पूर्वजों का नाम करना चाहिए।।

6. रूढ़ियों का त्याग और नवीन वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने की प्रेरणा

प्राचीन हों कि नवीन छोड़ो रूढ़ियाँ हो जो बुरी।

बनकर विवेकी तुम दिखाओ हंस जैसी चातुरी।।

× × × × × ×

व्यवसाय अपने व्यर्थ हैं अब नव्य यंत्रों के बिना।

परतंत्र हैं हम सब कहीं अब भव्य यंत्रों के बिना।।

7. स्त्री शिक्षा पर बल

विद्या हमारी भी न तब तक काम में कुछ आएगी।

अर्द्धांगनियों को भी सु–शिक्षा दी न जब तक जाएगी।।

४. आत्मनिर्भरता एवं स्वदेशी पर बल

अब तो उठो, हे बंधुओ! निज देश की जय बोल दो।

बननें लगे सब वस्तुएँ, कल कारखानें खोल दो।।

९. साम्प्रदायिक सौहार्द पर बल

हिंदू तथा तुम सब चढ़े हो एक नौका पर यहाँ।
जो एक का होगा अहित तो दूसरे का हित कहाँ।।
सप्रेम हिलमिल कर चलो, यात्रा सुखद होगी तभी।
पीछे हुआ सो हो गया, अब सामने देखो सभी।।

10. हिन्दी द्वारा भावैक्य की प्रेरणा

इस योग्य हिन्दी है तदपि अब तक न निज पद पा सकी।

भाषा बिना भावैकता अब तक न हममें आ सकी।।

11. काव्य–आदर्श की स्थापना

केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए।

उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए।।

'भारत–भारती' का प्रतिपक्ष

जिस भारत की भव्य संस्कृति के बखान में तानसेन और ताजमहल का जिक्र तक न हो, वह हिंदू भारत नहीं तो क्या होगा? किन्तु 'भारत–भारती' के हिंदू भारत में दक्षिण के लिए भी कोई स्थान नहीं है। जिस गौरवशाली अतीत का चित्र कवि ने खींचा है उसमें न मदुरै–मीनाक्षी के लिए स्थान है, न त्यागराज के लिए।..... फिर यदि धर्म की दृष्टि से देखें तो यह एक एसा हिन्दुत्त्व है, जिसमें बौद्धों के लिए भी स्थान नहीं है। ..... 'भारत–भारती' का 'हम' सिकुडकर सनातन धर्म तक सीमित रह गया है, और यह सनातन धर्म भी शुद्ध वर्णाश्रम आधारित, जिसमें शूद्रों को यह सीख दी गई है कि कोई बड़ा बनता नहीं लघु और नम्र हुए बिना।

–डॉ नामवर सिंह

निष्कर्ष

उपर्युक्त तथाकथित कमजोरियों के साथ भी निःसन्देह ''भारती भारती हिन्दी, हिन्दू हिन्दुस्तान के नारे को अंगीकार करते हुए जनजागरण का प्रधान स्वर है न केवल प्रणयनकाल के भारत में बल्कि समकालीन भारत के नवोत्थान के लिए भी प्रेरणादायो कालजयो कृति है।

धन्यवाद